सूर्यमुखी की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 572 हे. क्षेत्र में सूर्यमुखी की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 625 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

खेत की तैयारी : सूर्यमुखी की अच्छी पैदावार के लिये खेत की एक बार गहरी जुताई मिट्टी पलट हल से करके दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करें। प्रत्येक जुताई पर पाटा मार दें जिससे खेत की नमी बनी रहे तथा मिट्टी भुरभुरी हो जाय। खेत को समतल करके जल निकास युक्त बनायें।

क) उन्नत संकुल (कम्पोजिट) प्रभेद : माडैन, सूर्या, सी.ओ.-4, पैराडेविक, डी.आर.एस.एफ. 108,

ख) संकर प्रभेद : बी.एस.एच. 1, के.बी.एस.एच. 1, एम.एस.ए.एच. 1, 8 और 17, के.बी.एस.एच. 44

बोआई विधि : बीज दर : संकर 5 कि.ग्रा. तथा संकुल 8 कि.ग्रा./हे.। बोआई का समय : रबी : 1 अक्टूबर से 15 अक्टूबर। गरमा : 15 फरवरी से 10 मार्च, खरीफ : 1 जुलाई से 15 जुलाई तक। बीजोपचार : 16 घंटे बीज को पानी में भिगोने के बाद 5-6 घंटे छाया में सुखाएं और थीरम या ब्रॉसिकाल या कैप्टाफ (2 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज) से उपचारित कर बोआई करें। बोआई का तरीका : कतारों में टोभनी विधि से एक जगह 2-3 बीज डालें। संकुल के लिए दूरी 45×20 सें.मी. रखें। संकर के लिए दूरी 60×30 सें.मी. रखें। बीज 4-6 सें.मी. गहराई पर डालें। निकौनी : 40-50 दिनों तक खेत को अवांछित पौधों से बिलकुल साफ रखें। एक स्थान पर सिर्फ एक पौधा रहने दें।

बीज दर : 8-10 किलोग्राम प्रति हेक्टर।

खाद एवं उर्वरक : जीवांशयुक्त मिट्टी में सूर्यमुखी की अच्छी पैदावार मिलती है। अतः बोआई के 15-20 दिन पहले 50 क्विं./हे. कम्पोस्ट दें। उर्वरक की मात्रा आधारित खेती में 40:50:50:25::एन.:पी.: के.:एस. कि.ग्रा. प्रति हेक्टर, सिंचित अवस्था में 50:40:25::एन.:पी.:के. कि.ग्रा. प्रति हेक्टर, संकर किस्म में 60:90:60:25::एन.:पी.:के.:एस. कि.ग्रा. प्रति हेक्टर का उपयोग करें।

बोआई के समय सल्फरयुक्त उर्वरक ज्यादा उपयुक्त है। जिंक की कमी वाले खेत में बोआई से पहले प्रति हेक्टर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट डालें।

सिंचाई : सिंचाई की संख्या भूमि विशेष, जलवायु एवं मौसम पर निर्भर करती है। रबी में 2-3 सिंचाई। पौधों के विकास के लिए अंकुरण के 15-20 दिनों में तथा कली लगने के समय सिंचाई करना बहुत ही आवश्यक है। खरीफ में प्रायः सिंचाई की आवश्यकता नहीं पड़ती। गरमा में 3-5 सिंचाई देनी पड़ती हैं।

बीज भराव के लिए परसेचन क्रिया : सूर्यमुखी में मधुमक्खियों द्वारा भी बीज भराव अधिक होता है। अतः अच्छी फसल के लिए मधुमक्खी पालन हेतु खेतों में बक्सा रखें। मधुमक्खियों की कमी होने पर मुलायम कपड़ा हाथ में लपेट कर फूल के ऊपर हल्के हाथ से चारों ओर घुमाकर 10-15 दिनों तक प्रातः 10 बजे तक परसेचन क्रिया करें। इससे उपज अधिक प्राप्त होगी।

कीट नियंत्रण : जमीन के कीड़े (दीमक, कजरा, गड़ार, जड़, भृंग आदि) के लिए थिमेट (फोरेट) 10% दानेदार दवा का 10 कि.ग्रा./हे. की दर से बोआई के समय व्यवहार करें अथवा क्लोरपायरीफॉस 10% तरल दवा को 2.5-3 लीटर मात्रा 25 किलोग्राम बालू में मिलाकर (प्रति हेक्टर की दर से) आखिरी जुताई के समय भुरकाव करें। यदि खड़ी फसल में इन कीड़ों का आक्रमण हो तो क्लोरपाइरीफॉस 20% तरल दवा की 2.5 लीटर मात्रा को 1000 लीटर पानी में घोलकर मिट्टी पर छिड़काव करें। बीजोपचार के लिए डायमेथोएट 30% की 1 लीटर/हे. मात्रा, 5 लीटर पानी में घोलें और इससे 1 क्विं. बीज को उपचारित कर बोयें। अन्य कीट (भूआ-पिल्लू तथा आरा मक्खी आदि) के नियंत्रण हेतु छोटी अवस्था के पिल्लुओं को पत्तियों सहित नष्ट कर दें। बड़े पिल्लुओं को मारने के लिए प्रति हेक्टर डाईक्लोरवॉस (76%) का 500 मि.ली. की मात्रा या डाईमेथोएट (30%) का 1 लीटर की मात्रा या 5 लीटर इण्डोसल्फान (35%) को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। रस चूसने वाले कीट (लाही, थ्रिप्स आदि) के नियंत्रण हेतु प्रति हेक्टर 1 लीटर मेटासिस्टॉक्स 25% या 1 लीटर डाईमेथोएट 30% को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।